अखंड पार सुख अति घणूं, जेने सब्द न लागे कोय।
ए जाणी सुख केम मूकिए, ए साध संगते सुख होय।। २९ ।।

अखण्ड के सुख, जो बेहद के पार अपार हैं, वह जबान से कहे नहीं जा सकते। ऐसे सुखों को समझकर जिस संत के चरणों से ऐसे सुखों की प्राप्ति होती हैं, उसे क्यों छोड़ा जाए?

ए सुख केम प्रकासूं प्रगट, वेहद सुख केहेवाय।
ए ब्रह्मांड सर्वे रामत, उपनी छे एनी इछाय।। ३० ।।

अखण्ड घर के इन सुखों को कैसे जाहिर कर दें। यह बेहद के अखण्ड सुख हैं। यह ब्रह्माण्ड सारा माया का खेल है जो ब्रह्मसृष्टियों की चाहना से बना है।

ए रे वल्लभसूं वालपणे, कर दिए साध संग।
ए रे संगत केम मूकिए, मारा मूल तणो सनमंध।। ३१ ।।

हमारे धनी ने बड़े प्यार से हमें ऐसे सच्चे संत सतगुरु से मिला दिया है। अब इनसे हमारा मूल परमधाम का सम्बन्ध है, इन्हें हम कैसे छोड़ें?

सारनों सार ते संगत, जो ते साध मेलो थाय।
वेहद तणी निध लईने आपे, मूकिए ते केम पाय।। ३२ ।।

सार का सार सत्संग है। यदि सच्चे गुरु (सतगुरु) मिल जाएं तो वह हमें अखण्ड घर की न्यामत सौंप देंगे, इसलिए उनके चरणों को कैसे छोड़ा जाए।

सनमंधी ज्यारे साचो मल्यो, त्यारे जीवने थयो करार।
मेहेराज कहे धंन धंन ए घडी, धंन धंन कोहेडो अंधार।। ३२ ।।

अपने परमधाम के सच्चे साथी जब मिल गए तो जीव को चैन मिला। मेहराज ठाकुर कहते हैं कि इस मिलन के कारण ही वह मिलने की घड़ी धन्य-धन्य है और यह संसार धन्य-धन्य है।

॥ प्रकरण ॥ १२९ ॥ चौपाई ॥ २०४३ ॥

राग धना श्री

हे बैल तू अपना जुआ (ज्वारी) मत छोड़

वाटडी विस्मी गाडी भार भरी, धोरीडा मा मूके तारी धूसरी।।टेक।।
धोरीडा आरे मारे रे, हांरे तूंने गोधे घणे रे।
तूं तां नाके नथाणों रे, तूं तां बंध बंधाणो गुण आपणे रे।। १ ।।

श्री मेहराज कहते हैं कि धर्म का रास्ता कठिन है। गाड़ी पर भारी बोझ लदा है। हे मेरे जीव रूपी बैल! श्री राजजी महाराज ने सुन्दरसाथ को जगाने का भारी बोझ लाद रखा है। इस जिम्मेदारी रूपी जुए को मत छोड़। हे मेरे जीव! तुझे चलाने वाले गादीपति बिहारीजी अनुचित वचनों से तीखी आरें चुभो रहे हैं। तू तो अपनी मूल निसबत से नथा है (बंधा है) और अपने वचनों से ही बंधा है।

धोरीडा अवाचक थयो रे, मुख थी न बोलाय रे।
कल ने वेलूं रे धोरी, उवट ऊंचाणे स्वास मा खाय रे।। २ ।।

हे बैल! तू तो गूंगा हो गया है। मुंह से बोला नहीं जाता। बिहारीजी के गुरुपुत्र होने के कारण तू उनके सामने बोल नहीं सकता। दलदल भरे रेतीले और ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलने से तू हांफ रहा है,

Nijanand App

अर्थात् एक तरफ सुन्दरसाथ की जागनी का कठिन कार्य, दूसरी तरफ बिहारीजी का सुन्दरसाथ को धर्म से दूर करना, सुन्दरसाथ को जेल में डलवाना। उधर इतना होने पर गादीपति गुरुपुत्र की लाज रखने की परिस्थितियों की मजबूरियों से हांफ रहा है।

धोरीडा घणूं दोहेलूं छे रे, कीधां भोगवे रे।
तारे कांधे चांदी रे, दुखड़ा सहे रे।। ३ ।।

हे मेरे जीव रूपी बैल! यह रास्ता बड़ा कठिन है। तुझे अपने किए का फल भोगना है। तेरे कन्धों पर चांदी पड़ गई है (गर्दन मोटी हो गई है) और तू फिर भी दुःख सहन कर रहा है, अर्थात् हे मेरे जीव! वचन निभाना बड़ा मुश्किल है। तुझे धर्म के बोझ का जुआ उठाना ही पड़ेगा। गुरुपुत्र के कठोर वचनों की रगड़ और कठिन व्यवहार से तेरा दिल टूट गया है। अब कष्ट सहन करने के सिवाय और कोई उपाय नहीं है।

धोरीडा जाय रे उजाणी, द्रोडा द्रोड तूं आवे।
दया रे विना रे, बेठा मारडी पडावे।। ४ ।।

हे बैल! तू घर पहुंचकर पेट भरने के लिए दौड़ रहा है। इतना दौड़ने पर भी चलाने वाला निर्दयी होकर मार रहा है, अर्थात् हे जीव! तू सुन्दरसाथ का इतना बोझ उठाकर जल्दी परमधाम जाना चाहता है, परन्तु गादीपति गुरुपुत्र बार-बार अपशब्दों की मार मारकर तुझे दुःखी कर रहे हैं।

धोरीडा वही ने छूटे रे, करम आपणां रे।
मेहेराज कहे एम, कीधा छे घणा रे।। ५ ।।

हे बैल! तू अपने घर जाकर ही छूटेगा। मंजिल तक पहुंचना ही तेरा काम है। मेहराज ठाकुर कहते हैं, हे मेरे जीव! सतगुरु श्री देवचन्द्रजी ने जो जागनी का काम तुझे सौंपा है उसे तुझे पूरा करना ही है। तूने काफी काम कर लिया है, इसलिए अब जुए की अपनी जिम्मेदारी को मत छोड़ना।

।। प्रकरण ।। १३० ।। चौपाई ।। २०४८ ।।

राग श्री बेराडी

आवो अवसर केम भूलिए, कारण एक कोलिया अंन।
एटला माटे आप मुझाई, केटला करो छो कई कोट विघन।। १ ।।

एक कौर (ग्रास) अन्न के वास्ते ऐसे सुन्दर मनुष्य तन को क्यों गंवा रहे हो? इतने अन्न के वास्ते ही कई करोड़ों पाप करके मुसीबत झेलते हो।

प्रगट वचन सुणो उत्तम मानखो, तमें वोहोरवा आव्या छो सुख।
पण आंणी भोमे मुझ वण घणूं विसमी, सुखने आडे अनेक छे दुख।। २ ।।

हे उत्तम मानवो! यह बात स्पष्ट है कि तुम इस संसार में सुख लेना चाहते हो, परन्तु इस संसार में बहुत भारी उलझनें हैं। सुख के बदले अनेक दुःख हैं।

सुखने रखोपे दुख वीटया छे, लेवाए नहीं केणे काचे जन।
सूरधीर हसे खरो खोजी, ते लेसे दृढ़ करी मन।। ३ ।।

सुख की रक्षा के वास्ते दुःख चारों ओर से पहरा दे रहा है, इसलिए सुख लेना साधारण मनुष्य के वश की बात नहीं हैं। जो सच्चा खोजी और बहादुर होगा वही मन को दृढ़ करके सुख ले सकता है।

Nijanand App